



कुक्कुट पालन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका

लोकेन्द्र*, एस.डब्ल्यू. सावरकर*, जी.एम. चौधरी** और मनीषा दूत***

॥ कुक्कुट (पोल्ट्री) पालन और उत्पादन, दुनियाभर के गरीब ग्रामीण लोगों के लिए सबसे आवश्यक आर्थिक गतिविधि है। यह राजस्व के स्रोत के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन के रूप में भी काम करता है। ग्रामीण निवासियों, विशेष रूप से भूमिहीन या निम्न आय वाले परिवारों की सामाजिक-आर्थिक और पोषण संबंधी स्थिति को बढ़ाने के लिए, बैकयार्ड पोल्ट्री एक मामूली प्रारंभिक निवेश और उच्च आर्थिक प्रतिफल के साथ शुरू करना एक प्रबंधनीय और प्रेरक व्यवसाय है। कुक्कुट पालन महत्वपूर्ण प्रोटीन स्रोतों (जैसे-मांस और अंडे) के उत्पादन और रोजगार की संभावनाएं पैदा करता है। ग्रामीण महिलाओं ने ऐतिहासिक रूप से इस उद्योग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ॥

महिला सशक्तिकरण में मुर्गी/कुक्कुट पालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। माइक्रोक्रेडिट महिलाओं को स्वरोजगार और पूरक आय उत्पन्न करने के लिए सशक्त बनाने का एक प्रभावी माध्यम है। महिला सशक्तिकरण के प्राथमिक तीन संकेतक, महिलाओं की सुरक्षा, निर्णय लेने की क्षमता और गतिशीलता हैं। भारत में, ये तीनों पैमानों का स्तर बहुत कम है।

*एवं,**पशु चिकित्सा और पशुपालन विस्तार विभाग, पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन महाविद्यालय, कामधेनु विश्वविद्यालय, जूनागढ़ (गुजरात); ***पशु चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, राजूवास, बीकानेर (राजस्थान)

भारत में कुक्कुट पालन

भारत में पोल्ट्री उद्योग मुख्य रूप से दो उप-क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें से एक व्यावसायिक क्षेत्र है, जो कुल बाजार



बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग

हिस्सेदारी का लगभग 62.78 प्रतिशत भाग है। दूसरा असंगठित (बैकयार्ड मुर्गीपालन) और यह कुल बाजार हिस्सेदारी का लगभग 37.2 प्रतिशत है। बैकयार्ड पोल्ट्री, असंगठित क्षेत्र का एक हिस्सा है और गरीबों की आय का मुख्य स्रोत भी कहा जाता है। 20वीं पशुधन गणना अखिल भारतीय रिपोर्ट, पशुपालन, डेरी और मत्स्य पालन विभाग (वर्ष 2019) के अनुसार, भारत में 851.81 मिलियन कुक्कुट हैं। FAOSTAT उत्पादन के आंकड़ों (वर्ष 2019) के अनुसार, भारत, दुनिया में अंडा उत्पादन में तीसरे स्थान पर है। देश में वर्ष 2019-20 में 114.38 बिलियन अंडों का उत्पादन हुआ और यह वर्ष 2014-15 के

कुक्कुट पालन की बाधाएं

- अपर्याप्त परिवहन सुविधाएं, बाजार की जानकारी तक सीमित पहुंच और बाजारों से दूरी।
- टीकाकरण की कमी और महिलाओं को पशु चिकित्सा सेवाएं प्राप्त करने में कठिनाई।
- सूचना, प्रौद्योगिकी और विस्तार सेवाओं तक सीमित पहुंच।
- क्रेडिट तक सीमित पहुंच (परिणामस्वरूप उच्च गुणवत्ता वाले आहार और दवाओं की कमी)।
- पोल्ट्री पालन, जो पारंपरिक रूप से महिलाओं का अधिकार क्षेत्र रहा है, उनकी भूमिकाओं और दृष्टिकोणों में बदलाव देखा जा रहा है। पुरुष इसके आर्थिक मूल्य के बारे में जागरूक हो गए हैं। इसका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि अर्जित धन पर महिलाओं का कितना नियंत्रण है।

78.48 बिलियन से अधिक है। वर्ष 2014-15 में अंडा उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर 4.99 प्रतिशत थी। तब से इसमें उल्लेखनीय सुधार हुआ है। पूर्व वर्ष की तुलना में वर्ष 2019-20 में अंडे के उत्पादन में 10.19 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 2019-20 में प्रति व्यक्ति अंडे की उपलब्धता सालाना 86 अंडे थी।

संस्तुति

- एक अच्छी तरह से काम करने वाली विपणन प्रणाली तक पहुंच और उनके पशुधन उत्पादों की उच्च कीमत महिलाओं के लिए आवश्यक है।
- जहां महिलाओं को कुक्कुट पालने की तकनीकों में प्रशिक्षित किया जाता है। उन क्षेत्रों में अधिक कुक्कुट संचालन उत्पादक होता है।



स्वचालित प्रीफैब्रिकेटेड स्टील स्ट्रक्चर पोल्ट्री फार्म शेड

कुक्कुट पालन के लाभ

- पोल्ट्री की बाजार में अच्छी मांग और कीमतें हैं। इसे संभालना आसान है और इसके लिए बहुत कम बाहरी आदान की आवश्यकता होती है।
- बैकयार्ड कुक्कुट पालन घरेलू कचरे के पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग करने में सहायता करता है।
- कुक्कुट पालन ग्रामीण समुदायों को गरीबी से लड़ने में मदद कर सकता है। इसके साथ ही घर में उनकी सामाजिक स्थिति और शक्ति में भी सुधार होता है।
- बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग उच्च गुणवत्ता वाले अंडे और मांस का उत्पादन करती है। बैकयार्ड कुक्कुट के मल का उपयोग मृदा की उर्वरता में सुधार के लिए उर्वरक के रूप में किया जाता है। बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग अन्य प्रकार की खेती के साथ अच्छी तरह से काम करती है, जैसे मशरूम उगाना आदि।
- पुरुष परिवार के सदस्यों के पास आमतौर पर आय के कई स्रोत होते हैं, लेकिन महिला सदस्यों के लिए आय का प्राथमिक स्रोत अक्सर पोल्ट्री उत्पादों की बिक्री है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में कुक्कुट पालन के विकास के लिए अक्सर ऋण की उपलब्धता आवश्यक होती है।
- नीति-निर्माताओं और योजनाकारों को पोल्ट्री उत्पादन और ग्रामीण विकास में

महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देने और ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

निर्धन और सीमांत किसानों के पास बहुत कम संसाधन होते हैं। इसलिये किसान न केवल आय के स्रोत के रूप में मुर्गी पालन का उपयोग कर सकते हैं, बल्कि इस क्षेत्र का विकास निस्संदेह भारत को गरीबी के खिलाफ की जाने वाली लड़ाई में मदद कर सकता है। बैकयार्ड पोल्ट्री उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का सबसे सस्ता और समृद्ध स्रोत है। यह निर्धन ग्रामीण किसानों की पोषण स्थिति में सुधार करने में भी मदद करेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमांत और छोटे किसानों को काम खोजने में मदद करने के अलावा यह महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।



फ्री रेंज पोल्ट्री फार्म